मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जनवरी–जून, 2020 (Covid-19 विशेषांक)

RNI Reference No. : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 04 • Edition : 14

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

January-June, 2020 (Covid-19 Exclusive)

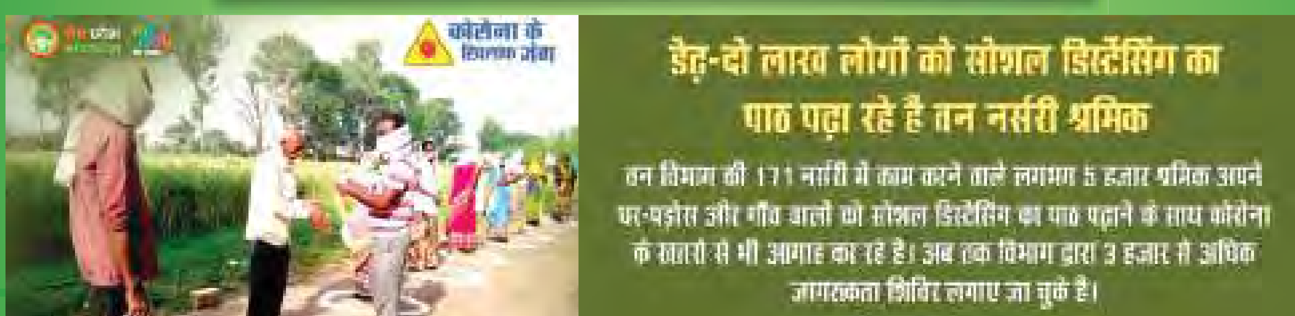

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का हरदा जिले के कृषकों से विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून पर संवाद

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का मंडला जिले की ग्राम वन समिति से संवाद

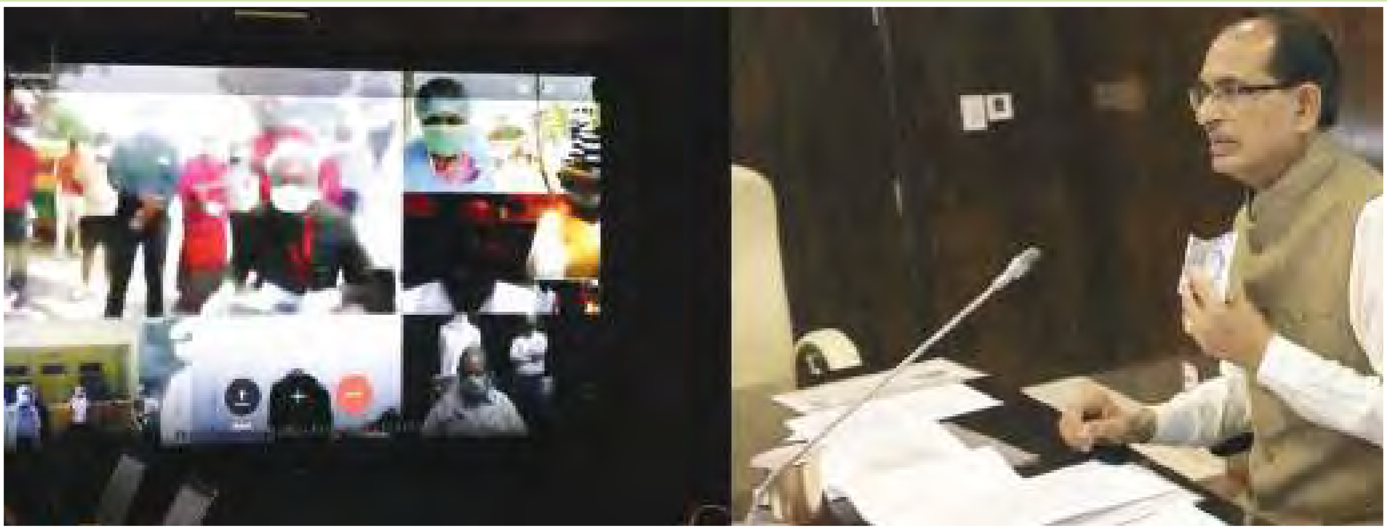

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का जीवन अमृत योजना के अंतर्गत लघुवनोपज संघ द्वारा काढ़े के वितरण विषय पर लोगों से संवाद

मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जनवरी–जून, 2020 (Covid-19 विशेषांक)

RNI Reference No. : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 04 • Edition : 14

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

January-June, 2020 (Covid-19 Exclusive)

Patron :

Dr. U. Prakasam(31/05/2020)

Principal Chief Conservator of Forests (HOFF)

Patron :

Rajesh shrivastav (01/06/2020)to...

Principal Chief Conservator of Forests (HOFF)

Editorial Board :	***Advisory Board :***
S.K. Mandal (31/05/2020) Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)	***Jagdeesh chandra*** (Retired Conservator of Forests)
Alok Kumar (01/06/2020) to... Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)	***A.K. Nagar*** (Retired Conservator of Forests)
Sanjay Shukla Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)	***R.K. Dixit*** (Retired DCF)
H.S. Negi Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)	***A.K. Khare*** (Retired DCF)
Pushkar Singh Additional Principal Chief Conservator of Forests (Development)	
Chitranjan Tyagi Additional Principal Chief Conservator of Forests (JFM)	
Rajesh Kumar Additional Principal Chief Conservator of Forests (CAMPA)	
Atul Shrivastav Additional Principal Chief Conservator of Forests (M.P.State Minor Forest Produce Trading & Development Co-operative Federation)	
Rakesh Yadav Additional Principal Chief Conservator of Forests (Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)	
B.K. Dhar Prachar Adhikari (Samanvay)	
S.P. Jain DCF (Research, Extension and Lok Vaniki)	

Editor :

Dr. P.C. Dubey

Principal Chief Conservator of Forests
(Production)

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram

Gaurav Rajput

Published by : APCCF (R/E) on behalf of M.P. Forest Department
Printed by : Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam
Printed at : Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1, M.P. Nagar, Bhopal
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhavan, Bhopal, M.P.
E-mail : pracharprasarprakosth@mp.gov.in, Contact No. : 0755-2524293, Editor : Dr. P.C. Dubey, APPCF (R/E)

इस बार के अंक में

12

अनुसंधान एवं विस्तार रोपणियों का श्रेणीकरण एवं मान्यता 01-11

ग्राम वन समिति, मनेरी, मंडला 12-15

Success Story of Barasingha Conservation at Kanha 16-17

प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्यप्राणियों की शरणस्थली कूनो राष्ट्रीय उद्यान 18-19

सीताफल बना बंधानी ग्राम के वनवासियों के आजीविका का प्रमुख आधार 20-22

हाट बाजार में पौधा विक्रय एक नवाचार 23-26

Vaniki sammelan 2020 27-29

कोविड-19 एवं विभिन्न वानिकी गतिविधियाँ

Covid-19 प्रभाव के समय मास्क तैयारी एवं रोपणी 30

Covid-19 समस्या एवं समाधान पौध तैयारी एवं रोपणी प्रबंधन 31

वन विभाग द्वारा विभिन्न नर्सरियों एवं वन क्षेत्रों में Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन किया गया तथा खाद्य सामग्री वितरण किया गया। 32-34

30

32

42

45

- वनश्री महिला क्लब - कोरोना लॉकडाउन के समय विभाग के अधिकारियों को प्रोत्साहन संदेश देते हुए 37-39
- कोविड-19 विशेष 40-41
- अनुसंधान एवं विस्तार की रोपणियों में जल संचयन व्यवस्था 42-42
- भोपाल वन मंडल उड़नदस्ता दल द्वारा मगरमच्छ का रेस्क्यू 43-43
- वन विहार में वन्यप्राणियों की सुरक्षा हेतु COVID-19 की गाइडलाइन का पालन 44-44
- नवाचार
  - टिश्यू कल्चर तकनीक द्वारा सागौन, बांस एवं संकटापन्न पौधों की तैयारी 45-49
  - जैविक रोपणी प्रबंधन में गौशाला एक प्रयोग 50-54
- मध्यप्रदेश के वनों की दुर्लभ धरोहर 55-60
- नगरीय/नगरेत्तर क्षेत्रों हेतु प्राकृतिक वन की संकल्पना 61-65
- Churna Jungle Safari 66-69
- विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2020 के अवसर पर वृक्षारोपण 70-73
- घड़ियाल संरक्षण : अभिनव प्रयास एवं परिणाम 74-74
- मादा भालू का साहसिक उद्यम 75-79
- अखबारों के आइनों से 80-81
- भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति व सेवानिवृत्ति 82-82

67

संपादकीय

प्रस्तुत कोविड–19 अंक जनवरी–जून, 2020 वनांचल संदेश एक विशेष अंक के रूप में याद किया जावेगा। सामान्यतः यह पत्रिका त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित की जाती है, परन्तु जनवरी से मार्च माह 2020 का अंक कोविड–19 के कारण समय पर प्रकाशन हेतु अंतिम रूप नहीं ले सका। अत: इस अंक को छः माह जनवरी से जून 2020 के रूप में प्रकाशित किये जाने का निर्णय लिया गया।

आपको ज्ञात होगा कि फरवरी 2020 में वानिकी सम्मेलन का आयोजन हुआ था, जिसमें वानिकी से जुड़े चार महत्वपूर्ण विषयों पर विचार मंथन किया गया। वानिकी सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर विभिन्न खेल–कूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ साथ ही वानिकी से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। इसी बीच कोविड–19 के व्यापक प्रभाव के कारण वन एवं वन्य प्राणी प्रबंधन, रोपण, पौध तैयारी, लघु वनोपज, अग्नि प्रकरण जैसे महत्वपूर्ण विषय भी एक चुनौती के रूप में विभाग के समक्ष आये। होम–टू–वर्क विभागीय गतिविधियों के संचालन में जुड़ा एक नया आयाम, साथ ही मैदानी अमले द्वारा क्षेत्र में क्षेत्रीय कार्य जिन्हें क्षेत्र में ही जाकर सम्पन्न करना तथा भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा कोविड–19 के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किया जाना एक चुनौती के रूप में सामने आया। इन विपरीत एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा उत्कृष्ट कार्य किये गये तथा लगातार इन परिस्थितियों में सभी कार्य किये जा रहे है। इन सभी गतिविधियों का समावेश इस अंक में किया गया है। कोविड–19 की चुनौतियों के बीच वानिकी कार्यों के प्रस्तुतिकरण सम्पादन के रूप में इस अंक को लम्बे समय तक याद किया जायेगा।

शुभकामनाओं सहित ...

(डॉ. पी.सी. दुबे)
भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक
उत्पादन
मध्यप्रदेश भोपाल

अनुसंधान एवं विस्तार रोपणियों का श्रेणीकरण एवं मान्यता

(Nursery Gradation & Accreditation)

विश्वसनीयता की ओर बढ़ते कदम ...

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त -

परिचय – सुदृढ़ पौध द्वारा वनों की उत्पादकता वृद्धि, सामुदायिक एवं निजी भूमि पर पौध रोपण तथा वानिकी विस्तार हेतु प्रत्येक कृषि जलवायु प्रक्षेत्र में क्रमशः बैतूल, भोपाल, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर, झाबुआ, खंडवा, रतलाम, रीवा, सागर एवं सिवनी में अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त की रोपणियां स्थापित हैं।

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त के अंतर्गत स्थित रोपणियों में ज्ञात बीज स्त्रोत द्वारा मानक गुणवत्ता के वानिकी, फलदार, औषधीय, लघु वनोपज, संकटापन्न, विलुप्तप्राय एवं आवश्यकतानुसार क्लोनल, ग्राटेड पौधे तैयार कर विभागीय वृक्षारोपण, शासकीय/अशासकीय विभागों, संस्थाओं एवं जनसामान्य को रोपण हेतु प्रदाय किये जाते हैं। पौध तैयारी के साथ–साथ वनों के महत्व एवं पारिस्थितिकीय सेवाओं के प्रचार–प्रसार, वन एवं पर्यावरण के विषय पर जागरूकता, कृषि वानिकी को बढ़ावा देने का कार्य किया जाता है।

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता का उद्देश्य -

प्रदेश में स्थित रोपणियों में गुणवत्तायुक्त पौधों की उत्पादन क्षमता के आकलन हेतु रोपणी कार्यों से जुड़े 22 बिन्दुओं पर परीक्षण कर रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता का कार्य वर्ष 2020 में सभी अनुसंधान एवं विस्तार में प्रारम्भ कराया गया। यह कार्य प्रदेश में स्थित रोपणियों हेतु प्रथम बार किया गया। प्रथम चरण में यह कार्य अनुसंधान एवं विस्तार स्तर पर स्वतः कराया गया एवं द्वितीय चरण में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा परीक्षण कराया जा रहा है।

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता का कार्य प्रतिवर्ष अनुसंधान एवं विस्तार द्वारा किया जावेगा तथा प्रत्येक 3 वर्ष के अन्तराल पर राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर संस्थान द्वारा रोपणियों का पुनः मूल्यांकन कराया जावेगा। रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता कार्य के निम्न सकारात्मक परिणाम भविष्य में प्राप्त होंगे :

- रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता से विभाग उत्कृष्ट पौधों, अन्य रोपण सामग्री की तैयारी एवं उपलब्धता पर प्रतिबद्धता का प्रदर्शन प्रभावी ढंग से कर सकेगा। (Demonstrate commitment to quality)
- विभिन्न अनुसंधान की इकाइयों में पदस्थ अधिकारी एवं कर्मचारियों को इस व्यवस्था द्वारा यह अवसर प्राप्त होगा कि वे अपने कार्यों को दक्षता के अनुरूप दायित्वों एवं आवश्यकताओं की पहचान एवं कार्यों को मूर्तरूप दे सकेंगे।
- रोपणी मान्यता एवं श्रेणीकरण द्वारा कर्मचारी अपनी प्रतिभा का अपनी क्षमता के अनुरूप बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे तथा मानक आकार एवं सुदृढ़ता के पौध नियमित रूप से तैयार कर पूर्ति कर सकेंगे। साथ ही उत्कृष्ट व्यवस्था स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील रहेंगे एवं संसाधनों का तर्क पूर्ण उपयोग कर सकेंगे।
- उक्त व्यवस्था के परिणामस्वरूप पौध तैयारी एवं विस्तार कार्य में संलग्न कर्मचारी अपने दायित्वों के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता को निर्धारित मानकों के आधार पर दर्शा सकेंगे।
- उक्त व्यवस्था द्वारा विभाग अपने महत्व, निष्ठा, उपभोक्ता सेवायें तथा अपने निर्धारित लक्ष्यों की सर्वोत्कृष्ट तरीके से प्रदाय कर सकेगा।
- उक्त व्यवस्था द्वारा विभाग निर्धारित मानकों के पौधे तैयार कर उपभोक्ताओं में एक विश्वास का आश्वासन पैदा कर सकेगा।

- यह व्यवस्था एक इच्छित वस्तुसूचक, स्वत: मूल्यांकन, लगातार सुधार एवं प्रगति हेतु पथ प्रदर्शित करेगा।
- यह व्यवस्था एक प्रतिस्पर्धी, जवाबदेही, संसाधन संयोजन का अवसर प्रदान करती है। व्यवस्था हमारे उत्पाद के प्रति एक विश्वास स्थापित करती है कि विभिन्न सामग्रियों के उपयोग में पूरी पारदर्शिता एवं व्यावसायिकता का दृष्टिकोण रहा है।
- रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता द्वारा विभाग अपने पौध तैयारी एवं विस्तार कार्यक्रमों को गति दे सकेगा साथ ही आमजन के बीच विश्वसनीयता स्थापित कर सकेगा।
- इस व्यवस्था द्वारा पौध एवं इससे जुड़ी सामग्री के विक्रय में बाधक तकनीकी खामियाँ दूर होंगी, जिससे हम विश्वसनीयता के साथ वन क्षेत्र एवं वन क्षेत्र के बाहर पौध उत्पाद एवं इससे जुड़ी रोपण सामग्री का विक्रय कर सकेंगे। पूरे सप्लाई चेन में एक विश्वास तथा गुणवत्ता की विश्वसनीयता बनी रहेगी।

अधोसंरचना एवं नवाचार -

विगत वर्षों में रोपणियों में ज्ञात बीज स्त्रोतों से विभिन्न प्रकार के वानिकी एवं संकटापन्न प्रजातियों के उच्च गुणवत्ता के पौधों की तैयारी हेतु आवश्यक अधोसंरचना विकास में व्यापक सुधार किया गया है। रोपणियों को एक नया आयाम एवं आधुनिक स्वरूप देने की दृष्टि से प्रमुख रूप से निम्न कार्यों को कराया गया –

- मानक आकार के उत्कृष्ट एवं विविधता युक्त पौध तैयारी हेतु अधोसंरचना विकास
- वेल्यू एडेड वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन
- माइक्रो स्प्रिंकलर सिस्टम स्थापना
- सौर ऊर्जा के माध्यम से विद्युत उत्पादन
- रोपणियों में जल संचयन का कार्य
- पेय जल व्यवस्था
- नीम खली/कोकोपिट/जीवामृत उत्पादन की व्यवस्था
- मिस्ट चैंबर, ग्रीन हाउस, ग्रीन शेड, पॉलीहाउस
- ईको–पर्यटन का विकास
- रोपणी से सम्बंधित विषयों पर शोध
- टिश्यू कल्चर द्वारा पौधा तैयारी
- बीज स्त्रोंतो की पहचान
- कौशल उन्नयन
- मॉनीटरिंग
- आम लोगों की ऑनलाइन माध्यम व्यवस्था द्वारा रोपणी तक पहुँच
- प्रचार–प्रसार
- रोपणियों का बहु आयामी स्वरूप
- रोपणी पर्यटन, ज्ञान, शिक्षा एवं मनोरंजन केन्द्र

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता प्रक्रिया -

1. श्रेणीकरण एवं मान्यता कार्य हेतु प्रथम चरण में उत्पाद मानकों तथा प्रक्रिया मानकों का निर्धारण किया गया।
2. द्वितीय चरण में आन्तरिक मूल्यांकन अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त स्तर पर किया गया।

3. तृतीय चरण में SFRI द्वारा मूल्यांकन किया जा रहा है।
4. चतुर्थ चरण में रोपणियों एवं उत्पाद हेतु श्रेणीकरण तथा मान्यता पर प्रकाशन किया जावेगा।
5. उक्त प्रकाशन पर सम्बंधित अनुसंधान एवं विस्तार से अभिमत लिया जाकर अंतिम रूप से श्रेणीकरण एवं मान्यता का प्रकाशन किया जावेगा।
6. रोपणियों के श्रेणीकरण एवं मान्यता के दृष्टिकोण से निम्न 9 बिंदुओं का चयन किया गया, जिस आधार पर श्रेणीकरण एवं मान्यता हेतु कार्यवाही की गयी।

चयनित गतिविधि

1. बीज स्रोत

बांस बीज संग्रहण क्षेत्र

बीज उत्पादन क्षेत्र सागौन, देवास इंदौर वृत्त

2. पौधों की विविधता

3. अधोसंरचना

स्प्रिंकलर

ग्रीननेट

उज्जैन नाका

मिस्ट चैम्बर

4. जैविक खाद उत्पादन

वर्मी कम्पोस्ट

वर्मी वॉश

5. अधोसंरचना

रोपणी में योग शिविर

हेल्थ कैम्प बड़गोंदा

गौशाला बड़गोंदा रोपणी

जल संचयन क्षेत्र देवास

सी.सी. टीवी कैमरों से अनुश्रवण

टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा सागौन पौधा

6. कौशल क्षमता एवं ज्ञान का प्रदर्शन

वर्मी कम्पोस्ट प्रशिक्षण, भोपाल वृत्त

रोपणियों में महिलाओं की भागीदारी

7. प्रचार प्रसार – पौधा विक्रय

8. व्यवसायिक सेवा

पेयजल सुविधा रीवा वृत्त

आगंतुक कक्ष भोपाल वृत्त

9. अभिलेख संधारण

सभी चयनित गतिविधियों हेतु विषय वस्तु से जुड़े बिन्दुओं का समूह तैयार किया जिनका विवरण निम्नानुसार है–

क्रमांक	चयनित गतिविधि	निर्धारित बिन्दु परिशिष्ट ''क'' अनुसार	निर्धारित अंक	प्रतिशत
1	पौधों की गुणवत्ता	4,12,13,23	32	32
2	पौध विविधता	21,22	12	12
3	अधोसंरचना, उपयोग एवं संधारण	5,6,7,9,10,11	17	17
4	जैविक खाद उत्पादन एवं उपयोग	8	5	5
5	नवाचार	20	5	5
6	व्यावसायिक सेवा	15,16,17,18	7	7
7	कौशल क्षमता	19	5	5
8	अभिलेख	14	7	7
9	प्रदर्शन (निष्पादन) अर्थात् पौधा विक्रय	3,2	10	10

उत्तम बीज संग्रहण

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त (रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता हेतु मापदण्ड)

रोपणी की उत्पादन क्षमता .... स्थान .... क्षेत्रफल .... मूल्यांकन अवधि ....

क्र.	रोपणी का नाम	(1) रोपणी पहुँच मार्ग (2) बोर्ड (3) साफ–सफाई (4) बेड अंकन (5) योजनावार सेक्टर। प्रति 1 अंक	पौध बिक्री	बीज स्त्रोत रजिस्टर संधारण	रोपणी अधोसंरचना								
					सिंचाई सुविधा	माइक्रो सिंचाई	जल संचयन उपाय	वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य जैविक खाद		मिस्ट चैम्बर पॉलीहाउस, ग्रीन नेट		बीज एवं उपकरण भंडार	सोलर पैनल
								उत्पादन 3 अंक	उपयोग 2 अंक	उपलब्धता 2 अंक	उपयोग 3 अंक		
	1	2	3	4	5	6	7	8		9		10	11
अंक		5	5	15	2	5	2	5		5		2	1
प्राप्त अंक													

रोपणी मैन्युअल			रोपणी मूलभूत सुविधा				कर्मचारी दक्षता एवं प्रशिक्षण		नवाचार एवं शोध (3+2) अंक	संकटापन्न प्रजातियों की विविधता एवं संख्या	बड़ प्रजाति न्यूनतम 1000 पौधे	ग्राफिटेड प्रजाति न्यूनतम 500 पौधे	कुल प्राप्त अंक	श्रेणीकरण	मान्यता
पौध तैयारी हेतु समय प्रवाह चार्ट का पालन	पौध संवर्धन व्यवहार का पालन	रोपणी अभिलेख संधारण	पेय जल	प्रसाधन	विश्राम स्थल	आगन्तुक कक्ष	प्रशिक्षण 2 अंक	कार्य कुशलता 3 अंक							
12	13	14	15	16	17	18	19		20	21	22	23	24	25	26
5	10	7	2	2	1	2	5		5	10	2	2			

नोट :
1. बिन्दु क्रमांक 4, 6, 7, 8, 13, 14, 20 में निर्धारित अंक का कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्त होना अनिवार्य होगा।
2. बिन्दु क्रमांक 19: रोपणी प्रभारी द्वारा न्यूनतम 3 प्रशिक्षण वर्ष में प्राप्त करना एवं कर्मचारी, पौध तैयारी कार्य में दक्षता प्रदर्शन से सम्बंधित है।
3. बिन्दु 3 पर देय अंक मु.व.सं. द्वारा दिये गये लक्ष्य के अनुरूप होगा।
4. बिन्दु 5 पर अंक सिंचाई सुविधानुसार पौध तैयारी के आधार पर अंक दिया जाये
5. निर्मित अधोसंरचना के क्रियाशील होने की स्थिति में ही अंक दिया जावे।
6. अधोसंरचनाओं के रख–रखाव के आधार पर अंक दिया जावे।
7. सभी अभिलेख संधारित होने पर निम्नानुसार अंक दिये जावे।
8. बिन्दु 10 का आंकलन मु.व.सं. द्वारा दिये गये लक्ष्य साथ ही स्व–प्रेरणा से बीज एकत्रीकरण एवं पौध तैयारी के आधार पर देय।
9. बिन्दु 20 पर अंक स्व–प्रेरणा से किये गये कार्य पर आधारित होगा।

रोपणी एक्शन प्लान	2 अंक
नर्सरी जनरल	1 अंक
नर्सरी स्टॉक रजिस्टर	3 अंक
नर्सरी स्टोर रजिस्टर	1 अंक

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता

श्रेणी	प्राप्त अंक	स्टार (मान्यता)
उत्कृष्ट	91–100	5
बहुत अच्छा	71–90	4
अच्छा	51–70	3
सन्तोषजनक	31–50	2
सामान्य	30 से कम	1

हस्ताक्षर
मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त

परिणाम

प्रदेश में प्रत्येक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त द्वारा स्थानीय स्तर पर एक दल का गठन कर श्रेणीकरण एवं मान्यता विषय पर परीक्षण कराया गया। परीक्षण अनुसार प्रदेश स्तर पर परिणाम निम्नानुसार है –

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता वर्ष 2019-2020

क्र.	अ.वि. वृत्त का नाम	रोपणी की संख्या	श्रेणीकरण एवं मान्यता									
			उत्कृष्ट	(स्टॉर) मान्यता	बहुत अच्छा	(स्टॉर) मान्यता	अच्छा	(स्टॉर) मान्यता	संतोषजनक	(स्टॉर) मान्यता	सामान्य	(स्टॉर) मान्यता
1	2	3	4		5		6		7		8	
1	बैतूल	10	0	0	1	4	8	3	1	2	0	0
2	भोपाल	17	1	5	2	4	8	3	4	2	2	1
3	ग्वालियर	12	0	0	3	4	7	3	2	2	0	0
4	इन्दौर	10	3	5	3	4	3	3	1	2	0	0
5	जबलपुर	6	2	5	4	4	0	0	0	0	0	0
6	झाबुआ	12	0	0	2	4	6	3	4	2	0	0
7	खण्डवा	22	0	0	3	4	11	3	8	2	0	0
8	रतलाम	11	1	5	0	4	4	3	6	2	0	0
9	रीवा	21	2	5	2	4	17	3	0	0	0	0
10	सागर	19	0	0	15	4	4	3	0	0	0	0
11	सिवनी	31	0	0	13	4	18	3	0	0	0	0
	योग	**171**	**9**	**5**	**48**	**4**	**86**	**3**	**26**	**2**	**2**	**1**

नवाचार

प्रदेश में पहली बार सुविधा के आधार पर वन विभाग की नर्सरियों की रैंकिंग

इंदौर की मालवा डेमो सहित नौ नर्सरी को मिली फाइव स्टार रैंकिंग

प्रदेश की उत्कृष्ट नर्सरी में भोपाल तीसरे नंबर पर

रोपणी श्रेणीकरण– उत्कृष्ट रोपणी			वर्ष 2019–2020
क्रमांक	**अ.वि. वृत्त का नाम**	**उत्कृष्ट रोपणी का नाम**	**मान्यता(स्टॉर)**
1	भोपाल	1. अहमदपुर	5
2	इन्दौर	1. मालवाडेमों	5
		2. बडगोंदा	5
		3. चन्द्रकेशर	5
3	जबलपुर	1. शहरी रोपणी	5
		2. परियट	5
4	रतलाम	1. क्षिप्राविहार	5
5	रीवा	1. रीवा	5
		2. समधिन	5
	कुल	9 रोपणी	5

उत्कृष्ट रोपणी

अहमदपुर रोपणी अ.वि. वृत्त भोपाल

बड़गोंदा रोपणी अ.वि. वृत्त इन्दौर

जयंतीकुंज रोपणी अ.वि. वृत्त रीवा

मालवाडेमो रोपणी अ.वि. वृत्त इन्दौर

रोपणी श्रेणीकरण–बहुत अच्छी रोपणी				वर्ष 2019–2020
क्रमांक	**अ.वि. वृत्त का नाम**	**रोपणी का नाम**	**रोपणी संख्या**	**मान्यता (स्टार)**
1	बैतूल	खाकरापुरा, बागदेव	2	4
2	भोपाल	बांसापुर, अमरावद	2	4
3.	ग्वालियर	केन्ट, अंगूरी बैराज, भूता	4	4
4.	इन्दौर	पारस, बरोठा	2	4
5.	जबलपुर	कटरा, अमेरा, सरसवाही, दरौली	4	4
6.	झाबुआ	मोजीपाडा, अनास	2	4
7.	खण्डवा	निमाड, नेपानगर, बोरगांव	3	4
8.	रीवा	मुकुन्दपुर	1	4
9.	सागर	चकरा, पाण्डाझिर, अमानगंज, अण्डेला, अमरमऊ, आमा, नोहटा, बहरोल, देवरा, विश्रामगंज, गंज, कुण्डेश्वर, सांगा, पिपरौट, सिरोंजा	15	4
10.	सिवनी	बाम्हनदेही–1, दुधिया, जेतपुर, बाम्हनदेही–2, बंजारी, बकौरी, आमगांव, यामनगर, परमहंसी, नान्हीकन्हार, पोआमा –2, बैनगंगा, पोआमा–1	13	4
रोपणी योग –			48	4

कुल रोपणियाँ	5 स्टार रैकिंग रोपणियाँ	4 स्टार रैकिंग रोपणियाँ	3 स्टार रैकिंग रोपणियाँ	2 स्टार रैकिंग रोपणियाँ	सामान्य रोपणियाँ
171	9	48	86	26	2

नोट: *उत्कृष्ट एवं बहुत अच्छी रोपणी का थर्ड पार्टी के रूप में राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर द्वारा पुनः परीक्षण कराया जा रहा है।*

सारांश

रोपणी श्रेणीकरण एवं मान्यता व्यवस्था द्वारा अच्छी गुणवत्ता के ज्ञात स्रोत से संग्रहीत बीज एवं मानक प्रक्रिया का पालन करते हुये मानक पौधा विभागीय रोपण कार्यक्रम के साथ निजी क्षेत्र एवं संस्थाओं को उपलब्ध कराये जा सकेंगे जिसके परिणामस्वरूप पौधों के जीवितता प्रतिशत एवं इच्छित उत्पाद लक्ष्य अनुरूप प्राप्त किए जा सकेंगे। साथ ही एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, जवाबदेही, संसाधनों का बेहतर एवं तार्किक ढंग से उपयोग किया जा सकेगा।

Annual work performance - grading of Research & Extention Circle
Year 2019-2020

S.No.	Activity	Assigned Mark	Indore	Jhabua	Bhopal	Ratlam	Khandwa	Jabalpur	Sagar	Gwalior	Rewa	Betul	Seoni
1	Known seed source	2.00	1.25	1.00	1.00	1.25	1.00	1.50	0.75	0.75	1.00	0.75	1.00
2	RET spp	1.00	1.00	0.75	0.75	0.75	0.75	1.00	0.75	0.75	0.75	0.50	0.75
3	Ficus & Medicinal Plant	0.50	0.50	0.25	0.25	0.50	0.50	0.50	0.50	0.25	0.50	0.50	0.25
4	Extension	1.00	1.00	0.50	1.00	0.75	0.50	0.75	0.50	0.50	0.50	0.50	0.50
5	Infrastructure Maintenance	1.00	1.00	0.50	0.75	0.75	0.50	1.00	0.50	0.50	0.50	0.75	0.50
6	Research & Initiative	1.00	1.00	0.25	0.50	0.75	0.50	0.75	0.50	0.50	0.50	0.50	0.25
7	Revenue	1.00	1.00	0.25	1.00	0.50	0.73	0.75	0.25	0.50	1.00	0.25	0.50
8	Training	1.00	1.00	0.50	1.00	0.75	0.50	1.00	0.50	0.50	0.75	0.50	0.50
9	Reporting	0.50	0.50	0.50	0.50	0.50	0.50	0.50	0.25	0.50	0.25	0.25	0.25
10	Organic Fertiliser use & Production	1.00	1.00	0.75	0.75	1.00	0.50	0.75	0.75	0.50	0.75	0.75	0.75
	Total	**10.00**	**9.25**	**5.25**	**7.50**	**7.50**	**6.00**	**8.50**	**5.25**	**5.25**	**6.50**	**5.25**	**5.25**

S.No.	RE Circle	Grading	Performance
1	Indore	1	Excellent
2	Jabalpur	2	
3	Bhopal + Ratlam	3	
4	Rewa	4	Very Good
5	Khandwa	5	
6	Jhabua + Sagar + Gwalior + Seoni + Betul	6	Good

(P. C. Dubey)
APCCF (RE)
Bhopal, M.P.

All CCF RE, ACF - Can respond it any Correction needed with sufficient data

ग्राम वन समिति, मनेरी, मंडला

चितरंजन त्यागी, APCCF, संयुक्त वन प्रबंध

पश्चिम मंडला वनमंडल के निवास परिक्षेत्र के जबलपुर से निवास रोड पर मनेरी औद्योगिक क्षेत्र के समीप स्थित, ग्राम मनेरी में ग्राम वन समिति का गठन वर्ष 995-96 में किया गया था। समिति को वन कक्ष क्रमांक आर.एफ. 642, क्षेत्रफल 186.92 हेक्टेयर आवंटित किया गया था। बाद में एक नारंगी क्षेत्र का कक्ष क्रमांक 814, क्षेत्रफल 6.7 हेक्टेयर भी समिति के क्षेत्र में शामिल किया गया। समिति के बुजुर्ग सदस्यों के अनुसार समिति को आवंटित संपूर्ण वन क्षेत्र पूर्णतया वृक्ष विहीन था। क्षेत्र में स्थित गोराम बाबा मठ के पुजारी बताते हैं कि उन्होंने बचपन से देखा था कि यह पहाड़ी पूरी तरह से वृक्ष विहीन थी। उनका जन्म लगभग 54 वर्ष पूर्व हुआ था, तब उनके पिता मठ के पुजारी थे। जलाऊ लकड़ी संग्रहण के दबाव के कारण प्रारंभिक वर्षों में वनों की सुरक्षा में अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। वर्ष 1998 में पश्चिम मंडला वनमंडल के परिक्षेत्रों का भी पुनर्गठन किया गया, जिसके तहत वन समिति मनेरी का वन क्षेत्र बीजाडांडी परिक्षेत्र में शामिल कर दिया गया था। वन प्रबंधन में सक्रिय, तत्कालीन सरपंच श्री गरीबा मार्को बताते हैं कि काफी संघर्ष के पश्चात् वनमंडल स्तर से पुनः समिति के वन क्षेत्र को निवास परिक्षेत्र में शामिल कराया गया। इससे समिति को संगठित होने का अवसर मिला।

कार्य आयोजना के अनुसार क्षेत्र का उपचार वित्तीय वर्ष 2003-04, 2004-05 एवं 2005-06 में बिगड़े वनों के सुधार के अंतर्गत किया गया था। वर्ष 2009 में श्रीमती कल्लूबाई मार्को को ग्राम वन समिति मनेरी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। कल्लूबाई के नेतृत्व में गांव में सभी परिवारों को शामिल करके गश्ती दलों का गठन किया गया। प्रतिदिन दो गश्ती दल क्षेत्रों में घूमने के लिए जाने लगे।

बाएँ से श्रीमती कल्लूबाई शिवानी एवं मार्को

प्रारम्भिक दो वर्ष तक समिति को काफी संघर्ष करना पड़ा। कड़ी मेहनत करने के पश्चात् आसपास के क्षेत्र में सभी को यह मालूम चल गया कि इस क्षेत्र में वृक्ष काटना संभव नहीं है। इस दौरान, अध्यक्ष कल्लूबाई एवं साथियों द्वारा सागौन की लकड़ी को जप्त कराने पर उनके विरुद्ध रुपये तथा जेवर आदि चोरी करने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। उप वनमंडल अधिकारी, निवास एवं परिक्षेत्र अधिकारी निवास द्वारा पुलिस थाने में जाकर वस्तुस्थिति से अवगत कराने पर प्रकरण समाप्त हुआ। इसी तरह अनेकों बार निहित स्वार्थ वाले लोगों ने समिति के लोगों को आतंकित

कारने के लिए पुलिस को शिकायत की गयी, किंतु धीरे–धीरे पुलिस विभाग ने भी यह समझ लिया कि चोरी रोकने के कारण स्वार्थी लोग समिति के सदस्यों के विरुद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज कराने की कोशिश करते हैं।

अब पिछले कई वर्षों से पुलिस का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है, जिसकी वजह से समिति का वन क्षेत्र पूरी तरह से सुरक्षित है। वन क्षेत्र की रक्षा करने के दौरान ज्यादा संघर्ष से गुजरने वाली समितियों में वन क्षेत्र के प्रति एक विशेष लगाव पैदा हो जाता है, इससे प्रबंधन को अधिक स्थायित्व मिलता है। वर्ष 2004 एवं 2020 में लिए गए गूगल–अर्थ से लिए गए उपग्रह के चित्रों की तुलना करने पर वन क्षेत्र में हुए सुधार का स्पष्ट साक्ष्य मिलता है।

उपग्रह चित्र मनेरी (गूगल–अर्थ) दिसम्बर 2004 –केवल पहाड़ी के ऊपरी क्षेत्र में कुछ वृक्ष है, शेष क्षेत्र रिक्त है या केवल लेंटाना की झाड़ियों से आच्छादित है।

उपग्रह चित्र मनेरी (गूगल–अर्थ) जनवरी 2020–उपग्रह चित्र में स्पष्ट नजर आ रहा है कि सम्पूर्ण क्षेत्र में सघन वन स्थापित हो चुका है।

कार्य आयोजना बनाने के दौरान किया जाना वाला संनिधि मानचित्रण वन क्षेत्र में आए परिवर्तन का एक बहुत अच्छा साक्ष्य है, जो प्रत्येक दस वर्ष में स्वतंत्र इकाई द्वारा किया जाता है। मनेरी समिति को आवंटित वन क्षेत्र का विगत् एवं वर्तमान कार्य योजना में किये गए वन संनिधि मानचित्र का तुलनात्मक अध्ययन करने वन संनिधि में बहुत अच्छा सुधार परिलक्षित हुआ है।

पश्चिम मंडला वनमंडल की विगत कार्य आयोजना (2005–15) श्री अजीत श्रीवास्तव द्वारा तैयार की गयी थी। कक्ष क्रमांक 642 को बिगड़े वनों के सुधार कार्यवृत्त में शामिल था। तैयार किए गए नक्शे से स्पष्ट है कि क्षेत्र पूरी तरह से आवरण विहीन था।

पश्चिम मंडला वनमंडल की वर्तमान कार्य आयोजना (2016–26) श्रीमती कमलिका मोहंता द्वारा तैयार की गयी है। नक्शे में कक्ष क्रमांक 642 के संपूर्ण क्षेत्र को पूरी तरह वन आवरण से आच्छादित दर्शाया गया है तथा सुधार कार्यवृत्त में शामिल किया गया है।

ग्राम वन समिति के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों से विस्तार पूर्वक उनकी अपेक्षाओं के संबंध में चर्चा की गई सभी ग्रामवासियों का मत है कि संयुक्त वन प्रबंधन के संकल्प के अनुसार विरलन से प्राप्त होने वाली समस्त वनोपज ग्राम वन समिति को प्रदान की जानी चाहिए ताकि निस्तार की आवश्यकताएं पूरी हो सके। इससे ना केवल इस समिति को बल्कि आसपास की सभी समितियों को भविष्य में भी वन क्षेत्र को उत्कृष्ट स्थिति में प्रबंधित करने की प्रेरणा मिलेगी। वनों के सुधार कार्यवृत्त के अंतर्गत लगभग 15 वर्ष पूर्व किए गए कार्यों एवं ग्राम वन समिति द्वारा उपलब्ध कराई गई सुरक्षा के कारण तराशे गए ठूठों पर एक से अधिक कॉपिस बड़े होकर गेड़ा (20 सेंटीमीटर से कम गोलाई की बल्ली) या बल्ली का रूप ले चुके हैं। रोपित पौधे भी वृक्ष बन चुके है। कृषि आधारित ग्रामीण समुदाय में विभिन्न कृषि कार्यों के लिए बड़ी मात्रा में 20 सेंटीमीटर से कम गोलाई के गेड़ा या डांडी की आवश्यकता पड़ती है। वैधानिक रूप से विदोहन की व्यवस्था ना होने के कारण बड़ी तादाद में युवा वृक्षों का विदोहन करके निस्तार की पूर्ति की जाती है, जिस से आने वाली सदस्य पर अत्यधिक विपरीत प्रभाव पड़ता है। अनियमित विदोहन को रोककर ग्राम वन समिति मनेरी ने पूर्णतया वन विहीन क्षेत्र को सघन वन क्षेत्र के रूप में स्थापित कर दिया है। इसके अलावा सामाजिक संगठन का गाँव के अन्य संसाधनों के प्रबंधन पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अच्छे वन आवरण से सिंचाई के तालाब के जलग्रहण क्षेत्र का आदर्श उपचार हो गया है तथा कृषि में भी सुधार हुआ है।

मनेरी वन समिति की सफलता से उभरने वाली महत्वपूर्ण सीखें निम्नानुसार हैं

1. ग्रामीण समुदाय उनकी आजीविका से जुड़े हुए संसाधनों के महत्व को बहुत अच्छी तरह से समझता है तथा आवश्यकता पड़ने पर बेहतर भविष्य के लिए वर्तमान के सीमित लाभ को छोड़कर बेहतर प्रबंधन के रास्ते को चुनने की क्षमता रखता है।
2. महिला अध्यक्ष नियुक्त होने पर समिति ने ज्यादा सक्रियता का प्रदर्शन किया। भविष्य के प्रति महिलाओं द्वारा ज्यादा बेहतर दृष्टिकोण का प्रदर्शन किया गया। अत: समितियों में महिला नेतृत्व को अवसर देने से बेहतर परिणाम लाए जा सकते हैं
3. तत्समय पदस्थ वनरक्षक द्वारा स्थानीय नेतृत्व को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जो संयुक्त वन प्रबंधन की सफलता में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। यह सिद्ध करता है कि यदि स्थानीय समुदाय को उचित नेतृत्व एवं मार्गदर्शन मिले तो वनों का उत्कृष्ट प्रबंधन स्थापित किया जा सकता है।
4. वन प्रबंधन के लिए विकसित सामाजिक संगठन अन्य संसाधनों जैसे जल, भूमि के बेहतर प्रबंधन का माध्यम बन सकता है।

Success Story of Barasingha Conservation at Kanha

L. Krishnamoorthy, IFS, Field Director, Kanha Tiger Reserve

One of the most professionally managed tiger reserves, Kanha is an excellent wildlife protected areain the country. It is a typical geo-physiographical representative of the central Indian highlands, animportant geographical region of our country, as far as the occurrence and distribution of floral and faunalspecies are concerned. This is also regarded as a very important centre of biodiversity conservation, and supports some endangered faunal species.

forest divisions are known as the northern and north-eastern races, respectively.

Until several decades ago, the hard ground barasingha had a wide distribution, even outside Madhya Pradesh. In and around the present Kanha Tiger Reserve, there was a very satisfactory distribution, and the animal had safe and unhindered access to most of its habitats for foraging, breeding and parturition. Consequently, the large population of this deer,

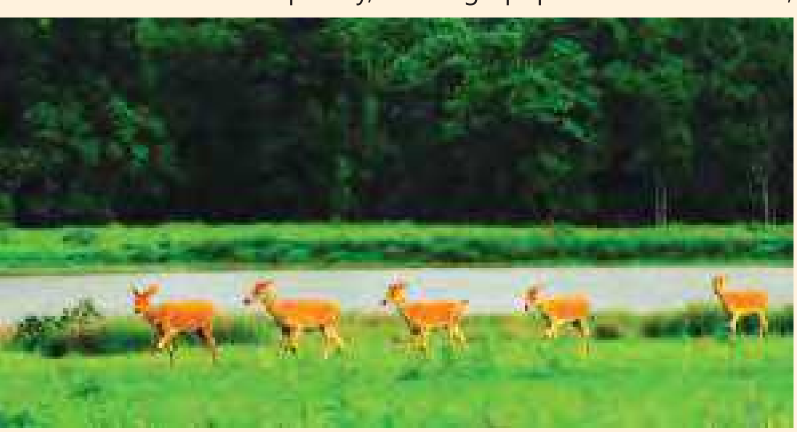

with good recruitments every year, could survive the onslaught of poaching and habitat loss due to encroachment for agriculture and altered land use patterns. It has been recorded that a census of this deer population was conducted in and around the present Kanha National Park in 1938, and there were 3,023 animals. The deer population, however, did not remain safe for long, and a large number of barasingha used to be killed by the local communities when large herds formed during the rut on grassy plains. Besides, wildlife habitats were subjected to illicit felling, encroachment, cattle grazing and fire. While some good steps were taken, they were too late to be effective, and poaching continued unabated, recording a gradual decline in barasingha population from 3,023 in 1938 to a barely conservable 66 in 1970. This small population was restricted only to the central meadows of the Kanha National Park. The subspecies was now on the brink of extinction.

In view of this, the Kanha management started taking some quick conservation measures to stable and reverse the decline. These managerial initiatives continue till now to resurrect this handsome deer species. As this cervid is regarded as a graminivore and food specialist, special managerial efforts are made

for the improvement of the grassland habitat for its survival. Besides, equitable distribution of water throughout the protected area, vegetation as fawning and escape cover and shelter are also important components. In this way, major practices are carried out for managing the barasingha habitat, some of them are: weed eradication, eradication of woody species, maintenance of tall grasses, exclosures for relieving pressure, in-situ enclosure, swamp/ marsh creation, wallows, connectivity between habitats and daily monitoring. This long-term measures resulted in the gradual increase of the deer species, and presently there are around 800 animals spread over the entire national park.

Date	No.
03rd March, 2015	8
15th March, 2015	8
14th January, 2016	6
27th January, 2017	11
16th February, 2020	13
Total	**46**

The special biology and ecology of this deer has made it so endangered and difficult to manage. Besides being a food specialist, the female comes into estrous only once a year and gives birth to only one fawn after a gestation period of about nine months. Consequently, the population is faced with many challenges resulting in low growth rate. This is now an established fact that small populations are challenged by a number of intrinsic (relating to genetics) and extrinsic (relating to environment) limiting factors that increase the likelihood of the population going extinct simply because the population is small. It was also felt that a geographically separate population of this deer species needed to be established to protect it from local extinction through deadly epidemic. It was clear that Kanha population is still at risk and it was sheer luck that no epidemic had so far caused mass mortality.

The choice eventually fell on the Satpuda Tiger Reserve, another equally fine protected area which once supported a small population of this deer species and currently harbours very good barasingha habitat. The department decided to capture and translocate some founder barasingha to Satpura Tiger Reserve for captivity conservation. The entire project involved a wide range of preparations at Kanha, including a technical protocol, procurement of specially designed vehicles and iron sheets for making boma, human safety gears, training to field personnel, and reconnaissance of transportation routes etc.

At Satpura, based on habitat suitability analysis, a large enclosure had already been designed to hold these animals. When preparations are over to satisfaction, barasingha were translocated to Satpura.

So far, 46 barasingha have been translocated to the Satpura Tiger Reserve, using the boma technique. These animals found home in a specially designed enclosure and multiplied into more than 75 animals. Between February and April 2019, 52 animals were released in the wild.

प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्यप्राणियों की शरणस्थली कूनो राष्ट्रीय उद्यान

प्राकृतिक सौंदर्य एवं वन्य प्राणियों की शरणस्थली कूनो राष्ट्रीय उद्यान

कूनो राष्ट्रीय उद्यान अपने नैसर्गिक सौंदर्य, प्रचुरता से पाये जाने वाले वन्य प्राणियों एवं अफ्रीकन चीता तथा एशियाई सिंहों के प्रस्तावित आवास स्थल के लिए प्रसिद्ध है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान मध्यप्रदेश राज्य के उत्तर पश्चिमी सीमा पर श्योपुर जिले के अन्तर्गत स्थित है। पूर्व में यह स्थल महाराजा ग्वालियर एवं पालपुर जागीरदार के शिकारगाह के रूप में प्रसिद्ध थी। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में भ्रमण हेतु पर्यटक ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, श्योपुर, सवाई माधोपुर से सड़क मार्ग के द्वारा सुविधा जनक रूप से पहुँच सकते हैं। रेल मार्ग के द्वारा शिवपुरी, ग्वालियर एवं सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन पर उतर कर सड़क मार्ग से यहां आया जा सकता है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा ग्वालियर है।

भौगोलिक रूप से कूनो राष्ट्रीय उद्यान अरावली पर्वत श्रंखला के दक्षिणी भाग एवं विंध्य पर्वत श्रृंखला के उत्तरीय भाग के मिलन स्थल पर स्थित है। इस राष्ट्रीय उद्यान को एशियाई सिंहों के दूसरे आवास के रूप में तैयार किया गया है, सिंहों के पुनर्वास हेतु घास के बड़े–बड़े मैदान तैयार किये गए हैं तथा इस हेतु उद्यान क्षेत्र के अन्दर पूर्व के 24 गांवों को पूर्णरूपेण विस्थापित कर पार्क सीमा से बाहर बसाया गया है।

कूनो राष्ट्रीय उद्यान की हृदय रेखा कूनो नदी जो चम्बल नदी की सहायक नदी है, कूनो राष्ट्रीय उद्यान के लगभग बीच में बहती है तथा राष्ट्रीय उद्यान को दो भागों में विभक्त करती है, इसी नदी के नाम पर ही इस राष्ट्रीय उद्यान का नामकरण किया गया है। (कूनो नदी विहंगम् दृश्य) कूनो वन्यप्राणी वनमण्डल का क्षेत्रफल 1306.140 वर्ग कि.मी. है, जिसमें कूनो राष्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 748.862 वर्ग कि.मी. तथा राष्ट्रीय उद्यान के चारो तरफ सुरक्षा हेतु बफर क्षेत्र बनाया गया है, जिसका क्षेत्रफल 557.278 वर्ग कि.मी. है, कूनो राष्ट्रीय उद्यान में तापमान ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम 47^0 तथा शीत ऋतु में न्यूनतम 0^0 तक हो जाता है, औसत वर्षा 900–1000 मि.मी. होती है।

(शिकार के साथ)

(पालपुर गढ़ी)

राष्ट्रीय उद्यान में 129 वृक्ष प्रजातियां जिनमें करधई, खैर, तथा सलई प्रमुख हैं, 73 शाक एवं झाड़ियां, 33 लताऐं एवं परजीवी प्रजाति तथा 35 प्रकार की घास एवं बांस की प्रजातियां पाई जाती हैं। इसी प्रकार वन्यप्राणियों की 35 स्तनपायी, 205 पक्षी, 14 मछली, 33 सरीसृप, एवं 10 उभयचरों की प्रजातियां पाई जाती हैं। क्षेत्र में प्रमुख शाकाहारी वन्यप्राणी जैसे– चीतल, नीलगाय, सांभर, चिंकार, चौसिंगा, जंगली सुअर, बंदर, लंगूर, खरगोश, मोर, सेही आदि पाये जाते हैं। मांसाहारी वन्यप्राणियों में बाघ, तेंदुआ, जंगली बिल्ली, लकड़बग्घा, भालू, सियार, लोमड़ी, भेड़िया, बिज्जू, आदि मुख्य रूप से विद्यमान है। जलीय जीवों में मगर तथा घड़ियाल कूनो नदी में पाये जाते हैं।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कूनो राष्ट्रीय उद्यान में अफ्रीकन चीता को लाने हेतु स्वीकृति प्रदान की गई है जो भविष्य में कूनो राष्ट्रीय उद्यान का एक प्रमुख आकर्षण रहेगा। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में वन्यप्राणियों के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिये कैरखो प्राकृति झरने से गुरूत्वाकर्षण बल पर पाइप लाइन के द्वारा लगभग 18 कि.मी. लम्बाई में पानी विभिन्न तलाबों में भेजा जाता है तथा साल भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित रहती है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में सवाई माधोपुर से आने वाले पर्यटक टिकटोली प्रवेश द्वार से आते हैं।

(नीमखोह कैम्प)

सीताफल बना बंधानी ग्राम के वनवासियों के आजीविका का प्रमुख आधार

उत्तर सिवनी, वनमण्डल सिवनी के अंतर्गत छपारा परिक्षेत्र के खैरमटाकोल (बंधानी) ग्राम में पूर्व में उच्च गुणवत्ता का सीताफल का उत्पादन हो रहा था। सीताफल के विक्रय हेतु बाजार बहुत कम उपलब्ध था, बड़े व्यापारियों की कमी के कारण मूल्य निर्धारण में आपस में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। समर्थन मूल्य के अभाव मे सीताफल के विक्रय दर निर्धारण मे कोई भूमिका नहीं थी। फलस्वरूप स्थानीय व्यापारियों एवं बिचौलियों द्वारा सीताफल बहुत कम दर पर खरीद कर अन्य बड़े शहरों के बड़े व्यपारियों को विक्रय किया जाता था, जिससे पूरा लाभ बिचौलियों को ही प्राप्त हो रहा था। वन विभाग द्वारा वन सुरक्षा समिति खैरमटाकौल के समन्वय से गांव मे ही बडे व्यापारियों (दिल्ली, नागपुर के) को सीधे ग्राम में बुलाकर नीलाम की व्यवस्था की गई। ग्राम में ही नीलाम की व्यवस्था होने पर बड़े व्यापारियों के बीच में प्रतिस्पर्धा एवं संग्राहकों सीताफल की दुगनी कीमत प्राप्त हुई। सीताफल की अच्छी कीमत प्राप्त होने पर ग्रामिणों मे जागरूकता पैदा हुई और सीताफल के दर निर्धारण में सक्रियता बढ़ी है एवं बिचौलियों की भूमिका बहुत कम हो गई। ग्रामीण जन मेढ़ों में सीताफल के बीज बुआई कर लगातार सीताफल के पौधों मे बढोत्तरी कर रहे हैं, वनों में उपलब्ध सीताफल के वृक्षों का भी संरक्षण कर रहे हैं। फलस्वरूप सीताफल का उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। कृषि पर आधारित परिवार आसानी से सीताफलों को संग्रहित करते हैं, जो आसिंचित एवं खेतों की मेढ़ों पर उपजे हैं, यह इनकी अतिरिक्त आय है, जो वार्षिक कृषि की आय से अधिक है, जिससे कारण आजीविका लगातार सुदृढ़ हो रही है। पूर्व में अशिक्षा एवं जागरूकता के अभाव में दूसरा न तोड़ ले इस उददेश्य के वनो में पाये उपजे हुये कच्चे सीताफल ग्रामीण तोड़ लेते थे, जिससे उनको बहुत कम पैसा प्राप्त होता था साथ ही कच्चे सीताफलों के सेवन से स्वास्थ्य में इसका विपरीत असर पड़ रहा था। वर्तमान में ग्रामीण पके फल अच्छी गुणवत्ता के संग्रहित कर रहे हैं, जिससे संग्राहकोष, व्यापारियों, उपभोक्ता तीनों को लाभ हो रहा है। ग्रामीणों के अंदर जागरूकता एवं उद्यमिता विकास मे स्थानीय वन अमला एवं वन अधिकारियों ने अहम भूमिका निभाई है, बैनर–पोस्टरों को लगाकर प्रचार–प्रसार किया गया है।

वर्ष 2018 में मुख्य वन संरक्षक सिवनी द्वारा वजन एवं गुणवत्ता के आधार पर वन समिति द्वारा सीताफल क्रय दर निर्धारित की गई। मध्यप्रदेश वन विभाग के अनुसंधान एवं विस्तार इकाइयों द्वारा उच्च गुणवत्ता के सीताफल के बीज की मांग की गई। उच्च गुवत्ता के सीताफल बाजार में वन समिति खैरमटाकौल के द्वारा क्रय किया जाकर अनुसंधान विस्तार इकाइयों का प्रदाय किया गया। समिति द्वारा सीताफल क्रय किये जाने के कारण बाजार मे प्रतियोगिता निर्मित हुई जिससे संग्राहकों लाभ हुआ साथ ही समिति को लगभग 55000 की आय हुई।

अनुसंधान एवं विस्तार के वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन मे कृषि वैज्ञानिक डॉ. व्ही.के. सिंह के द्वारा ग्राम खैरमटाकोल (बंधानी) में सीताफल के वृक्षों, फलों एवं मिट्टी का गहन अध्ययन उपरांत ग्रामीणों से विस्तार से चर्चा की गई। उनके द्वारा ग्रामीणों को सुझाव दिया गया। सीताफल की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक कीमत है, आपके द्वारा यह फसल वैज्ञानिक तरीके से करने पर अधिक लाभ होगा। उन्होंने कृषकों को मेड़ों के अतिरिक्त खेतों में (ब्लॉक वृक्षारोपण) हेतु प्रेरित किया। बंधानी ग्राम के तमसा पिता पाचो मर्सकोले के संबंध में कृषि आय एवं सीताफल से होने वाली आय का गहन अध्ययन किया गया। तमसा ने अपनी निजी भूमि में वर्ष 2018 में 12 एकड़ में मक्के की खेती की, जिसमें उसके बताये अनुसार मक्का विक्रय से कुल 1.50 लाख रु. की आय हुई। इस आय में खाद, बीज, जुताई एवं लेबर का व्यय सम्मिलित है। 12 एकड़ खेत के मेड़ों पर उपलब्ध सीताफल के पेड़ से वर्ष 2018 में तमसा को 1.65 लाख रु. की आय हुई। सीताफल तोड़ने में ग्रामीण लेबर एवं गांव में ही नीलाम करने से इसकी Investment (लागत) बहुत कम आई। कृषि वैज्ञानिक श्री वी.के. सिंह द्वारा समझाईश दी गई कि अगर आप मेड़ों में बिना किसी लागत के सीताफल से मक्का से अधिक आय प्राप्त कर रहे हो तो आपको सीताफल के ब्लॉक प्लान्टेशन करना चाहिए। ग्राम बंधानी में कुल 65 परिवार हैं, सीताफल से आय की परिवार विगत् 3 वर्षों की जानकारी संकलित की गई जिसका विवरण निम्नानुसार है :

वर्ष	राशि (लाख में)
2016	18.09
2017	25.38
2018	36.88

वैज्ञानिकों एवं वन विभाग के अधिकारियों के द्वारा प्रेरित होकर 4 किसानों ने स्वेच्छा से 2000 पौधों का रोपण माह जुलाई 2019 में किया है। रोपित समस्त पौधे जीवित हैं। कृषि वैज्ञानिक श्री वी.के. सिंह द्वारा अच्छी गुणवत्ता के सीताफल देने वाले वृक्षों से कटिंग तैयार किया गया जिसे 2000 पीपीएम, आईबीए के घोल में 5 मिनट तक भिगोकर 45 डिग्री पर पॉलिपाट में लगाने पर 50 से 60 प्रतिशत अंकुरण पाया गया। कटिंग से तैयार किये गये। इस प्रकिया से तैयार पौधों मे 3 साल में फल देना प्रारंभ कर देते हैं। ग्रामीणों ने बताया की छोटे आकार के फलों को व्यापारियों द्वारा क्रय मे रूचि नहीं ली जाती। अत: सीताफल का प्रसंस्करण केन्द्र स्थापित करना अति आवश्यक है। इससे प्रमाणित होता है कि अकाष्ठीय एवं औषधीय पौधे वनवासियों के लिए केवल आय के साधन नहीं हैं, बल्कि मुख्य रूप से खाद्य सुरक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करते हैं।

हाट बाजार में पौधा विक्रय एक नवाचार

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल

अमरावद रोपणी–रायसेन

बांसापुरा रोपणी–सीहोर

- अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल अंतर्गत 5 इकाइयां भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा एवं राजगढ़ आते हैं।

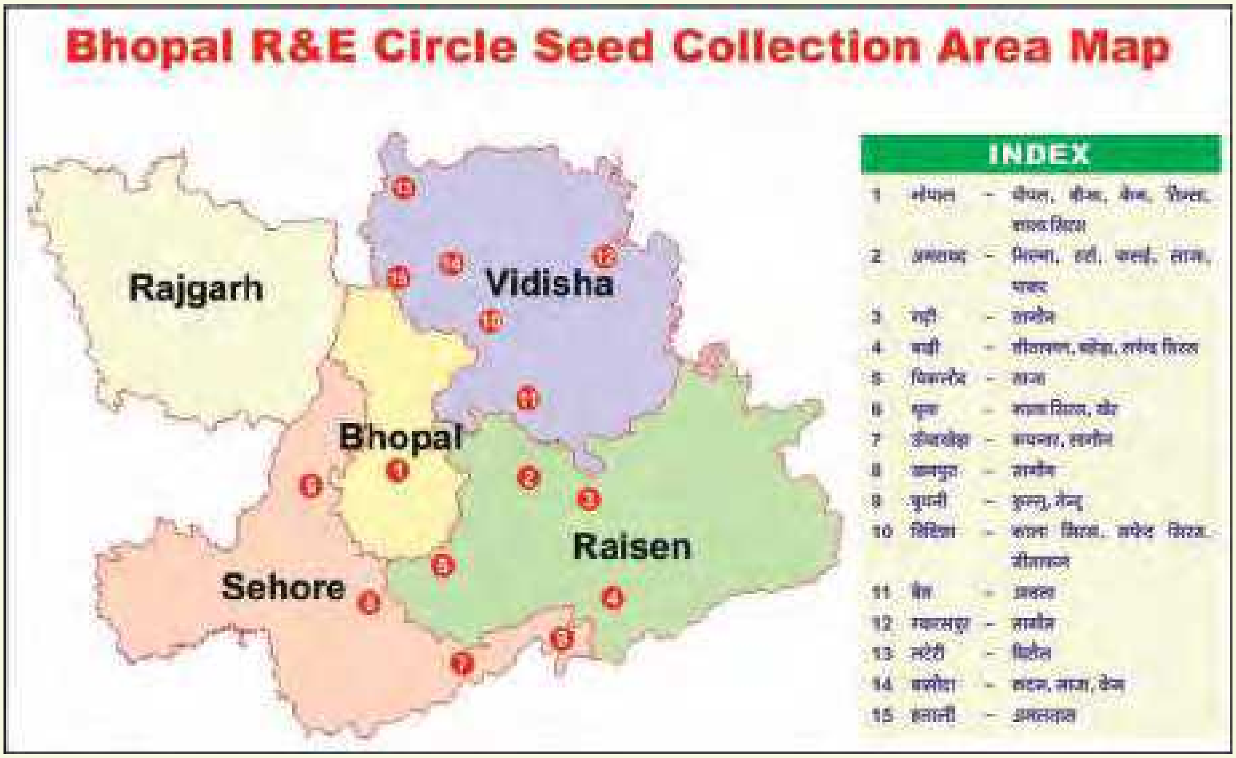

- प्रत्येक इकाई में आने वाले रोपणी से 20 या 30 किमी की परिधि में लगने वाले बाजार के दिवस की सूची तैयार की गई। चलित पौधा विक्रय केन्द्र द्वारा विभिन्न प्रजाति के पौधे हाट बाजार में आम जनता तक शासकीय दर से उपलब्ध कराये जा रहे हैं। पौधा विक्रय हेतु चलित वाहन में लगे लाउडस्पीकर का भी उपयोग किया जा रहा है।

रामजीबाबा होशंगाबाद मेला

कोलार मार्केट भोपाल

- हाट बाजारों में किसानों से उनके रूचि एवं आवश्यकता के पौधों की जानकारी ली जा रही है, जिससे उनकी माँग अनुसार प्रजातियों के पौधे वर्षा ऋतु में रोपण हेतु प्रदाय किये जा सके।

10 नम्बर मार्केट भोपाल

बिट्टन मार्केट भोपाल

विजय मार्केट भोपाल

मण्डीदीप भोपाल

- चलित पौधा विक्रय केन्द्र द्वारा पौधा विक्रय हेतु किये जा रहे प्रचार – प्रसार से बाजार में आ रहे लोगों में जागरूकता उत्पन्न की जा रही है।

शासकीय महिला महाविद्यालय सीहोर

जीरापुर बाजार राजगढ़

- एस.बी.आई. ग्रीन मैराथन कार्यक्रम में पौधा रोपण के लिये जागरूक किया गया एवं पौधा विक्रय किया गया।

टी.टी. नगर स्टेडियम भोपाल

टी.टी. नगर स्टेडियम भोपाल

- वर्मी कम्पोस्ट खाद के उपयोग के विषय में जागरुक किया जा रहा है।

नयापुरा मार्केट भोपाल

ग्राम पंचायत बेरखेड़ी वि.ख. जिला भोपाल

- 'हरा भोपाल, शीतल भोपाल' के तहत घर पहुंच सेवा के माध्यम से भोपाल नगर निगम के अंतर्गत आने वाले 85 वार्ड से प्राप्त आवेदनों से पौधों की मांग की पूर्ति जन सामान्य एवं शैक्षणिक शासकीय एवं अशासकीय संस्थानों में की गई। लगभग 8865 आवेदन प्राप्त प्राप्त हुये, जिसके तहत् 190000 पौधे प्रदाय किये गये।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टीलाखेड़ा

वार्ड नं. 23 भोपाल

Vaniki sammelan 2020

सामूहिक छायाचित्र (वानिकी सम्मेलन 2020)

Year 2019 turned out to be a watershed year in the history of the Madhya Pradesh Forest Department. After a long wait of 8 years, the state was able to regain the status of "tiger state" with an estimated tiger population of 526 as per All India Tiger estimate carried out by NTCA. The event is important from the fact that in 2014, we had slipped to third spot behind Karnataka and even Uttarakhand. It went a long way in restoring the confidence of the department and strengthened the belief in the scientific management of forests and wildlife. Our belief was further restored by the"India State of Forest Report 2019" published by FSI, which showcased the strength and resilience gains in forest cover within and outside forests of state's forests which held the forte despite tremendous pressures and registered .

Realizing that it was the proper time not only to build upon the strengths and gains, but also time to do serious introspection, take stock of the situation, look around for the emerging global, national and local trends in threats and opportunities. The threat of climate change, dependence of ever growing population on our forests, ever growing demands of developmental projects, associated change in perception and importance of forests and wildlife as our saviour from external threats our commitment to the global community in the form of NDCs and Bonn Challenge, not only needs to be understood and managed properly but also there is an opportunity to leverage the opportunities to underline the role of forests as the flagbearer of Sustainable Development Goals.

With the vision set in proper perspective with the design and approval of "Vision to delivery Roadmap 2020-25 an extensive month long exercise was planned and carried out in which the issues were discussed threadbare at various levels. To keep the exercise in sharp focus, four major issues facing the department were identified.

1. Expectation from the forestry sector.
2. Role of forestry in mitigating threats of Climate change.
3. Livelihood for forest dependent communities.
4. Governance and use of Modern technology.

To carry out meaningful deliberations, four working groups were formed having representation of all level of field formations, having a balanced representation of old and young generations. A statewide consultation process was initiated. Each topic was assigned to a working group. The nodal officers facilitated the discussion with maximum possible stakeholders. The groups have come up with

सामूहिक छायाचित्र (वानिकी सम्मेलन 2020)

recommendations in the form of a write ups and presentation. The recommendations have been further debated and discussed in front of the panelists which are the senior forest officers having core competencies and broad knowledge base in the relevant field. The recommendations are based on the best practices and relevant case studies, which have been documented.

A two day workshop in the form of "Vaniki sammelan 2020" in which all the IFS officers of the state will be presenting their recommendations to the Hon'ble Chief Minister. Hon'ble Forest Minister of and the senior most officers of the state. Hon'ble CM Sri Kamal Nath ji is expected to deliver the keynote address to the IFS officers on the key theme of the conference, "Role of forestry in mitigating the threats of climate change and ensuring livelihood to the forest dependent communities".

वानिकी सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर- खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

वानिकी सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर- खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

कोविड-19 एवं विभिन्न वानिकी गतिविधियाँ

Covid-19 प्रभाव के समय मास्क तैयारी एवं रोपणी

मास्क तैयारी क्षिप्रा विहार नर्सरी, उज्जैन

मास्क तैयारी शहरी रोपणी, जबलपुर

मास्क तैयारी कटारा नर्सरी, मण्डला

मास्क तैयारी खंडवा वृत्त

पारस नर्सरी में सामग्री वितरण

मोजीपाड़ा नर्सरी में दवाई छिड़काव

Covid-19 समस्या एवं समाधान पौध तैयारी एवं रोपणी प्रबंधन

बीज संग्रहण, पारस नर्सरी, देवास

वर्मी कम्पोस्ट तैयार शहरी रोपणी, जबलपुर

सागौन बेड पारस नर्सरी, देवास

सागौन पौध तैयारी बड़गोंदा नर्सरी, इंदौर

अनुसंधान एवं विस्तार, इंदौर

अनुसंधान एवं विस्तार, भोपाल

अनुसंधान एवं विस्तार, झाबुआ

सागौन बेड तैयारी अनु एवं वि, जबलपुर

वन विभाग द्वारा विभिन्न नर्सरियों एवं वन क्षेत्रों में Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन किया गया तथा खाद्य सामग्री वितरण किया गया।

वन विभाग दतिया द्वारा मजदूरों को खाना वितरण

Covid-19 प्रभाव के समय बारी नर्सरी में सुरक्षा नियमों का पालन

वन विभाग बालाघाट द्वारा खाद्य सामग्री वितरण

वन विभाग बैतूल द्वारा खाद्य सामग्री वितरण

वन विभाग द्वारा विभिन्न नर्सरियों एवं वन क्षेत्रों में Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन किया गया तथा खाद्य सामग्री वितरण किया गया।

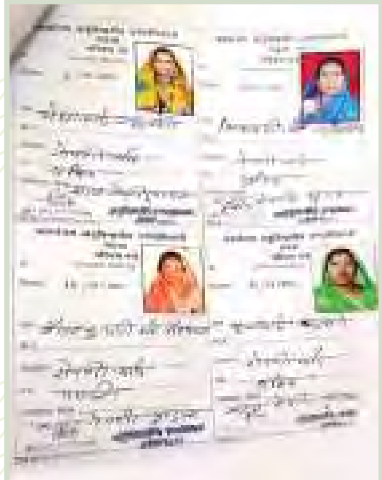

मजदूरों को पास जारी, कटरा रोपणी, मंडला

खाद्य सामग्री वितरण वनग्राम गेरखाल, हरदा

Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन, खंडवा वृत्त

Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन, इंदौर वृत्त

वन विभाग द्वारा विभिन्न नर्सरियों एवं वन क्षेत्रों में Covid-19 से सुरक्षा नियमों का पालन किया गया तथा खाद्य सामग्री वितरण किया गया।

My MP

क्या आप जानते हैं, वन विभाग की 171 नर्सरी में काम करने वाले लगभग 5 हजार श्रमिक अपने घर-पड़ोस और गाँव वालों को सोशल डिस्टेंसिंग का पाठ पढ़ाने के साथ कोरोना के खतरों से भी आगाह कर रहे हैं।

Department of Forest, Madhya Pradesh
Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India
Department of Labour, Madhya Pradesh
Jansampark Madhya Pradesh Shivraj Singh Chouhan

Pcof 110TF

COVID - 19 Contribution : Madhya Pradesh Forest Deptt.

corrected [illegible signature] 28/4

S. no.	Circle	Mask No	Sanitiser ML	Soap No	Ration Packet	Rest House	Vehicle No	Bans Balli No	Awareness Campaign No	Staff Duty	Financial Lakh	Remark
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1	Sagar	21850	1939	150	450	—	1	398	235	154	7.78	—
2	Bhopal	51589	6216	459	970	2	9	350	448	249	—	5 Bahasion, 1 WL conflict
3	Chhindwara	4750	2600	1000	200	—	3	—	250	29	0.85	—
4	Betul	56000	8050	250	110	—	—	40	102	122	—	—
5	Shivpuri	5801	855	—	325	—	—	368	230	161	0.50	~~[illegible]~~
6	Khandwa	7865	915	16917	8288	4	10	600	224	285	9.77	—
7	Chatarpur	7295	10141	287	45	—	—	2450	247	177	1.79	—
8	Shahdol	12050	70000	600	651	2	—	—	20	79	4.42	2 WL conflict cases
9	Indore	3725	680	350	—	4	—	2450	125	89	2.62	1 WL conflict case
10	Jabalpur	33804	6150	21363	1180	—	1	175	838	278	10.98	520 Pack Sanitizer
11	Seoni	22570	13384	5573	131	1	3	510	50	62	4.98	—
12	Balaghat	11473	8500	6733	4450	—	—	75	131	—	4.19	Forest School Quarantine Area
13	Ujjain	4990	250	3130	850	1	7	8400	125	132	6.01	—
14	Hoshangabad	44948	25549	34100	142	—	2	550	166	66	0.36	—
15	Rewa	13182	926	5188	1158	—	—	426	276	68	1.60	5 WL conflicts
16	Gwalior	7535	98208	1160	768	—	4	—	93	801	0.52	—
	TOTAL	309337	229359	97268	19118	14	40	16792	3540	2062	56.25	—

नोट:- 1. म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] म.प्र. शासन द्वारा कोरोना बीमारी के उपचार/ [illegible] हेतु रु. 22.22 करोड़ [illegible] [illegible] आदेश दिया गया जिसमें से लगभग 11.7 करोड़ [illegible] की आपूर्ति की गई।

2. प्रदेश में [illegible] [illegible] लगातार [illegible] की जा रही है। [illegible] [illegible] प्रचलित है।

3. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] किया जा रहा है।

4. प्रदेश में [illegible] 171 [illegible] 6 करोड़ [illegible] [illegible] किया जा रहा है।

5. Video Conferencing द्वारा मुख्यालय से लगातार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 28/4 [illegible]

COVID-19 - RE Activities

RE circle	No. of Nursary	Masks	Sanitiser	Staff Duty	Vehicle Given	Casual Labours Trained	Staff Trained.
1. Indore	70	370	30	–	–	28	All
2. Jhabua	12	550	36	–	–	183	"
3. Ratlam	11	425	45	–	1	155	"
4. Khandwa	22	250	55	1	–	150	"
5. Bhopal	17	425	325	–	–	348	"
6. Rewa	21	422	191	–	–	317	"
7. Sagar	19	851	55	7	1	549	"
8. Gwalior	12	356	60	–	–	197	"
9. Betul	10	260	50	–	–	139	"
10. Seoni	31	350	190	10	–	258	"
11. Jabalpur	6	65	60	12	1	47	"
Total -	171	4318	1097	30	3	2411	–

Note - These figures are more or less included in CCF (T) information

APCCF RE
14/4. 3 PM

वनश्री महिला क्लब - कोरोना लॉकडाउन के समय विभाग के अधिकारियों को प्रोत्साहन संदेश देते हुए

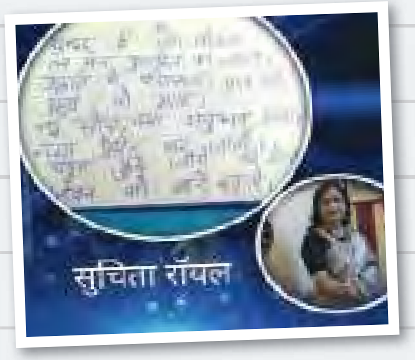

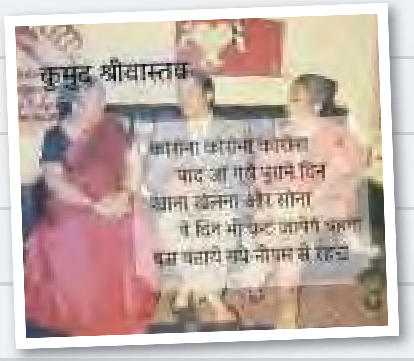

वनश्री महिला क्लब - कोरोना लॉकडाउन के समय विभाग के अधिकारियों को प्रोत्साहन संदेश देते हुए

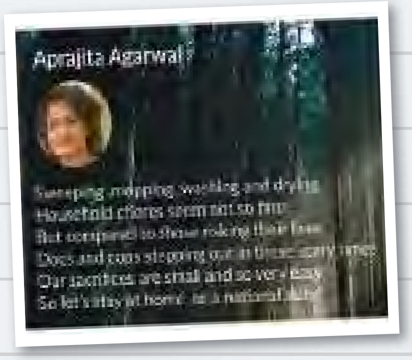

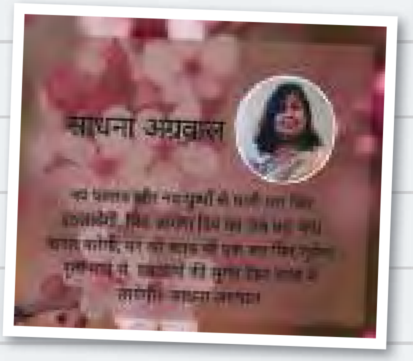

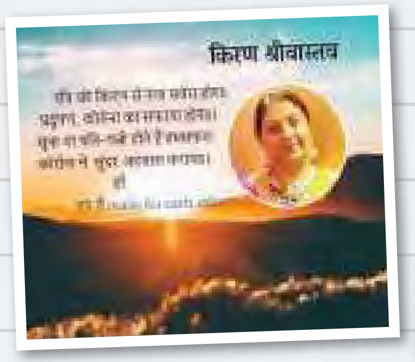

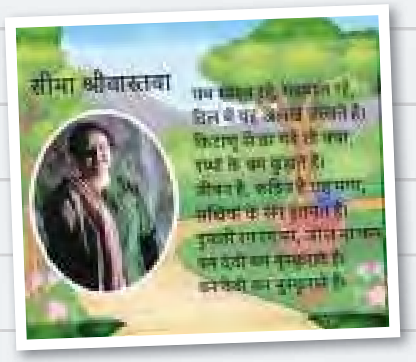

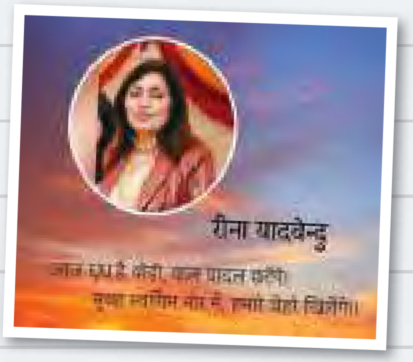

वनश्री महिला क्लब - कोरोना लॉकडाउन के समय विभाग के अधिकारियों को प्रोत्साहन संदेश देते हुए

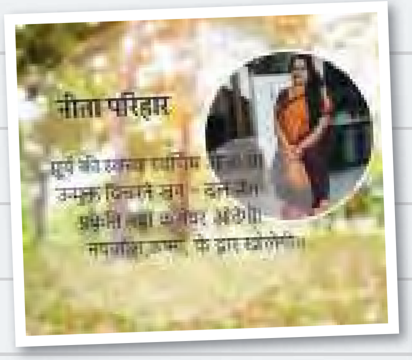

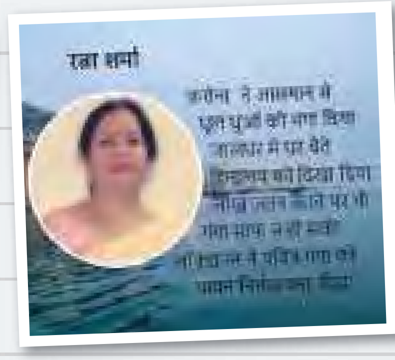

कोविड-19 विशेष

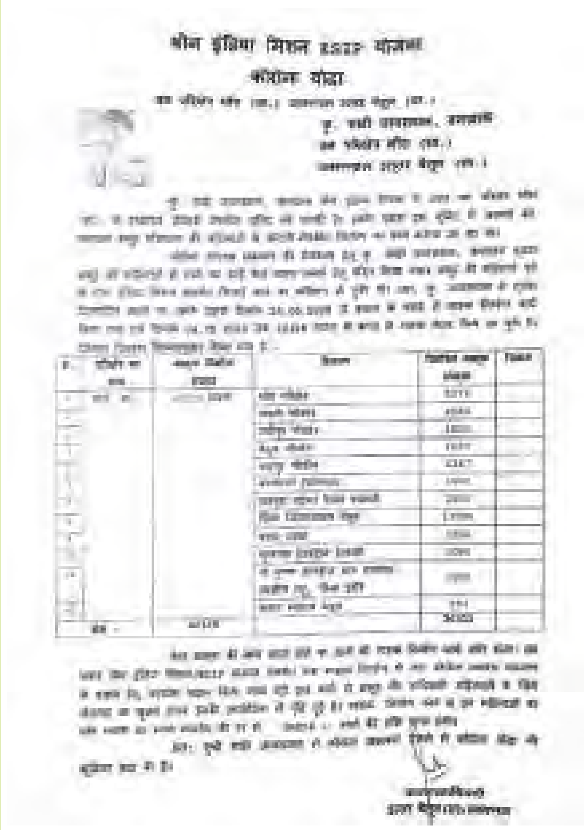

कोरोना योद्धा

Dr. Gurkaran Singh,

डॉ. गुरकरन सिंह,

पुलिस अधीक्षक

कार्यालय : वनमण्डलाधिकारी, सामान्य वनमण्डल नीमच

श्री ललित कुमार पाराशर, वनपाल सामान्य वनमण्डल नीमच अंतर्गत परिक्षेत्र सहायक सिंगोली, वन परिक्षेत्र– रतनगढ की हैसियत से कार्यरत थे। कोरोना महामारी से जनस्वास्थ्य की रक्षा हेतु पुलिस विभाग के साथ श्री पाराशर की विशेष पुलिस अधिकारी के रुप में ड्यूटी लगाई थी। जहां उनके द्वारा म.प्र. राजस्थान सीमा पर पुलिस अधिकारियों के साथ मुस्तैदी से ड्यूटी की जा रही थी। श्री ललित पाराशर, वनपाल की दिनांक 02.06.2020 को कोरोना संक्रमित होने से मृत्यु हो गई।

श्री पाराशर की विभागीय सेवा की शुरुआत दिनांक 26.05.1985 से सामान्य वनमण्डल मंदसौर अंतर्गत वनरक्षक के पद पर हुई। इनके द्वारा मंदसौर, रतलाम एवं नीमच वनमण्डल में अपनी सेवाए दी गई। समर्पित भाव से कर्तव्य निर्वहन करते हुये दिनांक 02.06.2020 को 59 वर्ष की आयु में कोरोना से युद्ध में शहीद हुये।

कोविड–19 विशेष

प्रशंसा-पत्र

इन्दौर में डॉक्टरों की टीम पर पत्थरबाजी कर हमला करने वाले रासुका के तहत बंदी आरोपी तथा कोरोना पॉजीटिव जावेद खान पिता नासिर खान उम्र 30 वर्ष निवासी इन्दौर को जबलपुर जेल में शिफ्ट किया गया, उक्त आरोपी मेडिकल कॉलेज जबलपुर से फरार हो गया, कोरोना पॉजीटिव होने के कारण यह सभी समाज के लिए अत्यंत घातक हो सकता था। आरोपी को आपके द्वारा अपनी सूझबूझ तथा सजगता का परिचय देते हुए दिनांक- 20.04.2020 को जिले की सीमा मदनपुर चेक पोस्ट पर पकड़कर अपने जिले का गौरव बढ़ाया है।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि भविष्य में भी ऐसे चुनौतीपूर्ण अवसरों पर आप अपने उत्कृष्ट कर्तव्यपरायणता का परिचय देते रहेंगे।

(दीपक सक्सेना)

प्रति,
श्री प्रिंस साहू,
वनरक्षक
बरमान,
जिला-नरसिंहपुर

जबलपुर से भागा 'कोरोना-कैरि
गिरफ्तार, कहानी में कई झो

भोपाल में 27, धार-रा
में 16-16 पॉजिटिव मि

मध्यप्रदेश में शुरू हुई आर्थिक गतिविधियां

देश में संक्रमितों की संख्या 17000 के पार, 543 की

सुबह सात बजे दबोचा

आरोपी जावेद आज सुबह सात बजे नरसिंहपुर-रायसेन जिले के सीमा पर तेंदूखेड़ा थाने के मदनपुर बॉर्डर पर पकड़ाया है। मदनपुर चेकपोस्ट पर वन विभाग के वनरक्षक प्रिंस साहू ने उसे पकड़ा और पुलिस को सूचना दी। जहां आरोपी पकड़ाया है, वह स्थान जबलपुर से करीब सवा सौ किलोमीटर दूरी है।

कार्यालय वनमंडल अधिकारी, नरसिंहपुर सामान्य वनमंडल नरसिंहपुर

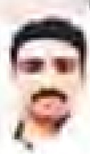

श्री प्रिंस साहू, वनरक्षक, विशेष कर्तव्य वन परिक्षेत्र बरमान, वनमण्डल नरसिंहपुर

जिला प्रशासन की मांग अनुसार वनमंडल नरसिंहपुर अन्तर्गत 50 वनपाल/वनरक्षक की ड्यूटी कोविड–19 महामारी के अंतर्गत कानून व्यवस्था हेतु लगाई गई है। जिसमें श्री प्रिंस साहू वनरक्षक विशेष कर्तव्य परिक्षेत्र बरमान की ड्यूटी नरसिंहपुर जिले के मदनपुर चेक–पोस्ट पर लगाई गई थी। राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के फरार एवं कोरोना संक्रमित रूपये 50000/– के ईनामी आरोपी जावेद खान को दिनांक 20.04.2020 को प्रातः 7.30 बजे वनरक्षक श्री प्रिंस साहू ने अत्यन्त संवेदनशीलता एवं गंभीरता बरतते हुये अपनी सूझ–बूझ एवं अदम्य साहस का परिचय देते हुये अपनी जान जोखिम में डालकर उक्त फरार आरोपी को चेक पोस्ट पर पदस्थ अमले के साथ पकड़ा। श्री प्रिंस साहू द्वारा किया गया कार्य अदम्य साहस का परिचायक है। श्री साहू को मुख्य वनसंरक्षक एवं वनमण्डलाधिकारी स्तर से प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया है एवं जिला स्तर पर जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक नरसिंहपुर द्वारा भी प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया है। उप पुलिस महानिरीक्षक (समन्वय), अ. अ.वि. हेतु–पुलिस महानिदेशक मध्यप्रदेश, भोपाल के द्वारा राशि 7000/– एवं कलेक्टर नरसिंहपुर द्वारा राशि 11000/– से पुरस्कृत किया गया है। श्री साहू को कोरोना वॉरियर्स की श्रेणी में रखे जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही बाबत् अनुरोध है।

(एम. आर. बघेल)
भा.व.से. 2007
वनमण्डलाधिकारी
नरसिंहपुर सा. वनमण्डल